NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX-A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No:2581-4230
VOLUME 3, ISSUE 9, Sep. -2017

Dr. Lajvanti

Dept. of Hindi

Govt. College Kosli, Haryana

पं॰ लखमीचन्द के सांगों में चित्रित नैतिक विचारः एक अध्ययन

Abstract

पं॰ लखमीचन्द को हरियाणा का महान् सांग सम्राट माना जाता है । उनके द्वारा गाई जाने वाली रागनियों और सांगों के आज भी युवा बड़े उत्साह के गुनगुनाते देखे जा सकते हैं । सांग गायन में जितनी ख्याति उन्हें मिली उतनी अन्य किसी भी सांग गायक को नहीं मिली । पंडित लखमीचन्द हरियाणा के सर्वाधिक लोकप्रिय लोकगायक थे । उनका नाम हरियाणा के लोकमानस में इस कदर रच–बस गया था कि उनके सांगों को देखने के लिए लोग कई–कई मील पैदल चलकर देखने जाया करते थे । आज भी हरियाणा के लोग खेतों, खलिहानों, चौपालों, मेलों और अनेक सामाजिक पर्वो एवं तीज त्यौहारों के अवसर पर इनकी रागनियों और भजनों को गा–बजाकर आनंद की अनुभूति करते हैं । हरियाणा की जनता यह सोच भी नहीं सकती कि पंडित लखमीचन्द के इन रसिक एवं ज्ञान से ओत–प्रोत भजनों एवं रागनियों का कोई अन्य विकल्प भी हो सकता है ।

पं॰ लखमीचन्द जी का जन्म सन् 1901 में गाँव जाटीकलां, जिला सोनीपत में एक मध्यम वर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ । इनके पिता उमदीराम एक साधारण किसान थे । पं॰ जी का आरंभिक जीवन संघर्षमय बीता । वे बचपन में स्कूल जाने की बजाए गाए चराने जाने लगे । गीत–संगीत के प्रति रूचि उनकी

बाल्यकाल से ही रही थी । वे भजन सुनने के लिए दूर–दूर के गांवों में जाकर संगों और रागनियों का आनंद लेने लगे। गुरुमान सिंह से पं॰ जी ने गीत–संगीत की शिक्षा प्राप्त की और फिर अनेक भजन मण्डलियों और सांग मण्डलियों के साथ रहकर अपनी जन्मजात प्रतिभा को और अधिक गूढता प्रदान की । पंडित जी की किसी भी सुमधुर आलाप उनके हृदय को रसप्लावित कर देता है । हरियाणा की जनता उन्हें सुनकर झूम उठती है ।

पं॰ लखमीचन्द के लोक–साहित्य में जो युगबोध उभरकर आया है, वह अपनी सम्पूर्ण सार्थकता, विशेषता और अद्‌भुत साक्ष्यों के साथ बड़ा सटीक व मर्मान्तक है । युगबोध ही अपने ही युग या समय का पूर्ण यथार्थबोध हुआ करता है । इसमें अपने युग की आर्थिक, ऐतिहासिक पौराणिक, सामाजिक, सांस्कृति आदि गतिविधियों और स्थितियों का यथा–संभव चित्रण होता है । अतः युगबोध किसी भी सफल साहित्यकार के लेखक की पहली शर्त है । पं॰ लखमीचन्द का लोक–साहित्य बदलते युगीन परिदृश्यों का वर्णन उनकी प्रखर बौद्धिक चेतना को व्यक्त करता है।

पंडित लखमीचन्द के अनुसार जब से मानव ने बुद्धि से सोचना प्रारंभ किया तभी से वह किसी–न–किसी रूप में नैतिक तथ्यों को प्रकट करता रहा है और उनके अनुरूप व्यवहार भी करता रहा है। यह सभी दार्शनिक मानते हैं कि जब तक मानव नैतिक तथ्यों के अनुरूप व्यवहार नहीं करता है तो वह अव्यवस्थित समाज का सदस्य ही रहता है। इसका अर्थ यह है कि समाज का अस्तित्व नैतिक मूल्यों पर आधारित है। यही कारण है कि दार्शनकि एवं सामाजिक चिन्तक नैतिकता को अधिक महत्त्व देते रहे हैं। यह भी स्पष्ट है कि जिस समाज में नैतिक मान्यताओं, विचारों एवं मूल्यों को अधिक महत्त्व दिया जाता है वे अधिक प्रगतिशील हैं। मानव विवेकशील एवं सामाजिक प्राणी है। उसकी अपनी असीम इच्छाएं हैं। वह

इन इच्छाओं की तृप्ति हेतु साधन जुटाता है, इस समय उसमें अनेक प्रकार की प्रवृत्तियाँ पैदा होती है लेकिन अपनी अभिरूची के अनुसार प्रवृत्तियों का ज्ञान प्राप्त करके, सीमित साधनों द्वारा संसार की वस्तुओं को प्राप्त करना चाहता है। जब वे उसे प्राप्त नहीं होती तो वह जीवन का अन्तिम लक्ष्य प्राप्त करें ले जो हमेशा सुख देता रहे। जब ऐसी बात मानव मन में आती है तो वह सोचने पर विवश हो जाता है कि जीवन में समस्याएं क्यों आती हैं उसका निवारण कैसे किया जा सकता है इसके लिये वह अपनी प्रवृत्तियों पर काबू पाना चाहता है। उसका जीवन संघर्षमय बन जाता है।उसे जीवन में सफलता–असफलता मिलती है, जब वह विचार करने पर बाध्य होता है कि जीवन क्या हैं, मैं क्या हूँ, जीवन जीने का सिद्धान्त क्या है? आदि। जब मानव इस पर विचार करता है यहीं से नैतिकता की शुरूआत होती है।

महाभारत के आदिपर्व (122/11–17) में नैतिक विचारधारा का क्रमिक विकास बताया गया है। यहाँ हम ऐतिहासिक तथ्यों का वर्णन नहीं करना चाहेंगे बल्कि यह बताना चाहते हैं कि नीति के विकास में प्रमुख बातें क्या–क्या रही हैं। वैसे तो भारतीय दर्शन में नीति तत्त्वों को बड़ी सुन्दर व्याख्या की गई है। इसमें निर्देश, सूक्ति उपदेश आदि का समुचित वर्णन मिलता है।

डॉ॰ मनमोहन सहगल के अनुसार, 'साम्प्रदायिक से परे, सात्विकता वे पराभूत, विश्व–मानवता को राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक घेरे से बाहर मानवीय सम्बन्धों के चश्में से देखने का नाम मानवतावाद है जोकि मानव–धर्म का मूल आधार है।' पं॰ लखमीचन्द जी के जीवन काल में देश अंग्रेजी शासन के अधीन था। इसके अलावा हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति में विद्वेष भी फैला हुआ था। पं॰ लखमीचन्द जी ने सभी धर्मों को मानवता के सूत्र में पिरोते हुए कहा कि हम सभी उस परमसत्ता की संतान हैं जिसने हमें पैदा किया है। आज के युग में मानव

दानव बनता जा रहा है। मानवीय संवेदनाएं दिन–रात समाप्त होती जा रही है। मनुष्य आज नीति स्वार्थों के आगे अन्धा होकर अपना–पराया सभी भूला रहा है–

'डाट जुबान बस कर चुपकी बदकार होज्या रै।

चुपकी रहै तेरा भाई मरज्या, जै पूरण बेअदबी करज्या।

गिरज्या आसमान खाण्डा मोम की धार होज्या रै।'

'पूरणमल' सांग में पूरणमल के पिता अपनी पत्नी नूणादे के कहनेपर की उसका सौतेला बेटा पूरणमल उस पर बुरी नजर रखता है। तब वह उसे धमकाता हुआ कहता है कि पूरणमल ऐसा कभी नहीं कर सकता है, तब वह स्वांग रचती है और राजा को पूरणमल को सजा देने के लिए मजबूर कर देती है।

मानव धर्म का आदर्श और इसकी मनोभूमि संसार में सबसे ऊँची है। पूरे विश्व के लोग सुख–शान्ति और प्रेम से रहे यही मानवता का सर्वोत्तम गुण है। लेकिन आधुनिक गुण में मानवता कहीं न कहीं गुम होती जा रही है। रिश्ते तार–तार हो रहे है। 'सेठ ताराचन्द' सांग में चन्द्रगुप्त अपने स्वार्थ के लिए अपनी पत्नी को टापू पर अकेले छोड़ आता है –

कौड करी तनै रात नै बणजारे केसी आग धधकती छोड़ग्या पिया।

सजन मैं सांस मार कै रोऊं, आज केसी जिन्दगी भर न सोऊँ

कडै ल्हकोऊँ इस गात नै, काचे दूध कैची लाग

लटकती जाणूं दरखत पै घिया।'

आधुनिक युग में मनुष्य के लिए मनुष्यता अति आवश्यक है। आज के युग में चारों ओर दुःखी व असहाय मिल जाएंगें। हमें उनके काम आना चाहिए। सदैव

दूसरों की सहायता के लिए तत्त्पर रहना चाहिए। राजा बलि ने तो मानवता की रक्षा के लिए अपना शरीर तक न्यौछावर कर दिया था। पं॰ लखमीचन्द कृत सांग 'राजा हरिश्चन्द्र' में राजा हरिश्चन्द्र ने मानवता की रक्षा हेतु ऋषि विश्वामित्र को अपना संपूर्ण राज्य दान में दे दिया था और स्वयं बिकने के लिए तैयार हो जाते हैं और कालियां भंगी के यहाँ नौकरी करने लगते हैं जहाँ उनकी पत्नी अपने बेटे रोहताश की लाश लेकर आती है और उसके पास लाश जलाने तक के पैसे नहीं होते। वह अपना चीर लाश जलाने के बदले में दे देती है। ऐसा देखकर कालियां जैसा कठोर ह्रदय व्यक्ति भी पिघल जाता है –

'नौकर आल़ा फर्ज कालिए निभा आाखीर दिया रै।

हो लिए दाम वसूल जा हरिया उल्टा चीर दिया रै।

देसी घी की खुशबू थी आज बांस जणूं, खत्ते मैं।

इतनी गहरी चोट कंवर की ल्हास पड़ी पत्ते मै।

पूत मरग्या और पति बिछडग्या गर्दिश के जत्थे मैं।

मैं के साहूकार बणूं तेरे दो गज के लत्ते मैं।

बज्जर का हिया करके बणा फकीर दिया रै।

माँ बणकै नै सब तै ज्यादा बेटे में रूख हो सै।

कोढी काणा लंगड़ा हो पर उसे का दुःख हो सै।

जन्म लिया उन्नै मरें सरे पर अपणे का दुःख हो सै।

जो माच्छर माखीनै ना समझै उस माणस मैं टुक हो सै।

उल्टा जा वा हास फूंक दे दुखिया नै धीर दिया रै।

ल्हास नग्न पड़ी चीर ले आया के फूंक इसे जर नै।

घणा लोभ तो नीचा दीख दे शिखर चढ़े हुए नर नै।

कै एक वर्ष तक जीवूं हरिचन्द्र गर्दिश के चक्कर नै।

बेटी ब्याहणे के फिकर मैं सहम लुटाग्या जर नै।

रात दिना के रंज फिकर नै फूंक शरीर दिया रै।

शीलवान गुण तजता कोन्या, हल्दी तजै ना जरदी

सवा रुपये मैं चीर ले आया या के सोची बेदर्दी।

लखमीचन्द डोर हाथ हरी कै कदे गर्मी कदे सर्दी।

दुश्मन गेलां नहीं करी जा जो ब्याही गेलां कर दी।

ठोकर मारीचिता खिण्डादी चुभो सीने मैं तीर दिया रै।'

पं॰ लखमीचन्द जी धर्म को सर्वोपरि मानते हैं। वे कहते हैं कि मनुष्य को एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। वे मानते हैं कि मानवता की सेवा करने वाले हाथ जितने पवित्र होते हैं उतने कोई ओर नहीं। आधुनिक युग में भी उनकी मानवता के प्रति ऐसी सोच ज्यों की त्यों विद्यमान है। आज भी अनेक मनुष्य मिल जाते हैं जो किसी ओर की सहायता करने में आत्मसुख की अनुभूति करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ॰ मीरा गौतम : हरियाणवी लोकधारा, प्रकाशन विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

2. मुन्शीराम शर्मा : वैदिक संस्कृति और सभ्यता, चौखम्बा रोड़, वाराणसी, 1958
3. महासिंह पूनिया : हरियाणा हिन्दी प्रबन्ध काव्य, निर्मल बुक एजेन्सी, कुरुक्षेत्र, 1998
4. डॉ० महावीर दाधीच : आधुनिकता एवं भारतीय परम्परा, शब्द लेखा प्रकाशन, बीकनेर, 1971
5. डॉ० महेन्द्र भानावत : लोकनाट्य परम्परा और प्रवृत्तियाँ, बाफना प्रकाशन, जयपुर, पृ० 1971-72
6. रणजीत सिंह : हरियाणवी सांगों का वस्तुपरक विश्लेषण भाषा विभाग, हरियाणा, चण्डीगढ़, 1971
7. डॉ० रमेश कुन्तल मेघ : आधुनिकता और आधुनिकीकरण, अक्षर प्रकाशन, अंसारी रोड़, नई दिल्ली, पृ० 1969
8. रविंद्र कुमार सिंह, सन्त काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता, वाणी प्रकााश्न, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ० 1994
9. राजाराम शास्त्री : हरियाणा का लोकमंच, लोक संपर्क विभाग, हरियाणा, चण्डीगढ़, 1989
10. डॉ० राजेन्द्र स्वरूप : सांग सम्राट पं० लखमीचन्द, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, 1991
11. राजेन्द्र रंजन : लोकोक्ति और लोक विज्ञान, के० एल० जैन इण्टर कॉलेज सारणी, अलीगढ़, 1998